

कवच होला यहा धुंधको भमाने होला हजार मायकाद मिठे को नन नु पिठिया परि डुवा डिंगन नु मि
तन नु भुवन नन नु धर्म जो दू पोठा जाना नाहि पछि न्या जाना भुमि पति फलित हेवे न राजा प
जधम नन नु शास्त्रा पति वचन दु आछ नु श्रि पति आकास्वा मि कावत मा हेन नु संसार ड
खिका वस प र्या ठन सास्त्र का प्रमान माने न न साधु कन पिडा होला दुर्जन को चलति होला नव
ति आर्यो भनि था होला धन भार कु वेद संवत् पार यत्ना कन दिया को निर्फल छ कु वेद को हो
भया धो मिहा कि डुन कलि माय जो वरि ह मा छ भया । उषाव । नाहिको यक कु मा आ
यो र हीरामु छे उ क न्या मा पोह रिस भंछन राजा छे उ विरा भो लि होला नि मि पती भो लि आया
सो जना उता भया ए सो कुमार थत्ता पार डूवे जना हि डी भया । उषाव । धर माय का वर ले
को प्र कि म न ता रि देउ मा गि छे के पि कि म न ता रि भछ वे ज स्का से वे गु सा द न स्कन रि उता भरा व
र छे म न र वे गु न दे ज न भया को ह रूप न सो दे व ने हो भंदा सो भया दि आ लो भ वि ए

